रविवार 21 दिसंबर, 2025

विषय — क्या ब्रह्मांड, मनुष्य सहित, परमाणु बल द्वारा विकसित है?

स्वर्ण पाठ: यिर्मयाह 10: 10, 12

"परन्तु यहोवा वास्तव में परमेश्वर है; जीवित परमेश्वर और सदा का राजा वही है।उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ से बनाया, उसने जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया, और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है।"

उत्तरदायी अध्ययन: अय्यूब 36: 22, 24, 25
अय्यूब 37: 5
अय्यूब 38: 3-5, 7

22 देख, ईश्वर अपने सामर्थ्य से बड़े बड़े काम करता है, उसके समान शिक्षक कौन है?
24 उसके कामों की महिमा और प्रशंसा करने को स्मरण रख, जिसकी प्रशंसा का गीत मनुष्य गाते चले आए हैं।
25 सब मनुष्य उसको ध्यान से देखते आए हैं, और मनुष्य उसे दूर दूर से देखता है।
5 ईश्वर गरज कर अपना शब्द अद्भूत रीति से सुनाता है, और बड़े बड़े काम करता है जिन को हम नहीं समझते।
3 पुरुष की नाईं अपनी कमर बान्ध ले, क्योंकि मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे उत्तर दे।
4 जब मैं ने पृथ्वी की नेव डाली, तब तू कहां था? यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे।
5 उसकी नाप किस ने ठहराई, क्या तू जानता है उस पर किस ने सूत खींचा?
7 जब कि भोर के तारे एक संग आनन्द से गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे?

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 33: 6, 9

6 आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुंह ही श्वास से बने।
9 क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया; जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया॥

2. यहोशू 1: 1 (यह), 2 (उठना), 3, 5, 9 (होना)

1 ...यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से जो नून का पुत्र था कहा,

---

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2 ...मेरा दास मूसा मर गया है; सो अब तू उठ, कमर बान्ध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन पार हो कर उस देश को जा जिसे मैं उन को अर्थात इस्राएलियों को देता हूं।
3 उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्थात जिस जिस स्थान पर तुम पांव धरोगे वह सब मैं तुम्हे दे देता हूं।
5 तेरे जीवन भर कोई तेरे साम्हने ठहर न सकेगा; जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूंगा; और न तो मैं तुझे धोखा दूंगा, और न तुझ को छोडूंगा।
9 क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहां जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा॥

3. यहोशू 10: 1, 3-5 (से *1st* ,), 5 (इकट्ठा), 6, 8-10 (से *1st* ,), 12, 13 (से *1st* .), 13 (इसलिए), 14

1 जब यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने सुना कि यहोशू ने ऐ को ले लिया, और उसको सत्यानाश कर डाला है, और जैसा उसने यरीहो और उसके राजा से किया है, और यह भी सुना कि गिबोन के निवासियों ने इस्राएलियों से मेल किया, और उनके बीच रहने लगे हैं,
3 इसलिये यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने हेब्रोन के राजा होहाम, यर्मूत के राजा पिराम, लाकीश के राजा यापी, और एग्लोन के राजा दबीर के पास यह कहला भेजा,
4 कि मेरे पास आकर मेरी सहायता करो, और चलो हम गिबोन को मारें; क्योंकि उसने यहोशू और इस्राएलियों से मेल कर लिया है।
5 इसलिये पांचों एमोरी राजाओं ने ....अपनी अपनी सारी सेना इकट्ठी करके चढ़ाई कर दी, और गिबोन के साम्हने डेरे डालकर उस से युद्ध छेड़ दिया।
6 तक गिबोन के निवासियों ने गिलगाल की छावनी में यहोशू के पास यों कहला भेजा, कि अपने दासों की ओर से तू अपना हाथ न हटाना।
8 और यहोवा ने यहोशू से कहा, उन से मत डर, क्योंकि मैं ने उन को तेरे हाथ में कर दिया है; उन में से एक पुरूष भी तेरे साम्हने टिक न सकेगा।
9 तब यहोशू रातोरात गिलगाल से जा कर एकाएक उन पर टूट पड़ा।
10 और यहोवा ने इस्राएलियोंके साम्हने उनको ढांढस बंधाया,
12 और उस समय, अर्थात जिस दिन यहोवा ने एमोरियों को इस्राएलियों के वश में कर दिया, उस दिन यहोशू ने यहोवा से इस्राएलियों के देखते इस प्रकार कहा, हे सूर्य, तू गिबोन पर, और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की तराई के ऊपर थमा रह॥
13 और सूर्य उस समय तक थमा रहा; और चन्द्रमा उस समय तक ठहरा रहा, जब तक उस जाति के लोगों ने अपने शत्रुओं से पलटा न लिया॥
14 न तो उस से पहिले कोई ऐसा दिन हुआ और न उसके बाद॥

4. अय्यूब 37: 14 (खड़ा होना), 23

14 ... इस पर कान लगा और सुन ले; चुपचाप खड़ा रह, और ईश्वर के आश्चर्यकर्मों का विचार कर।
23 सर्वशक्तिमान जो अति सामर्थी है, और जिसका भेद हम पा नहीं सकते, वह न्याय और पूर्ण धर्म को छोड़ अत्याचार नहीं कर सकता।

5. लूका 1: 5-9, 11-15 (से *1st*,), 19 (मैं), 24-28, 31, 36, 37

5 यहूदियों के राजा हेरोदेस के समय अबिय्याह के दल में जकरयाह नाम का एक याजक था, और उस की
पत्नी हारून के वंश की थी, जिस का नाम इलीशिबा था।
6 और वे दोनों परमेश्वर के साम्हने धर्मी थे: और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलने वाले
थे।
7 क्योंकि इलीशिबा बांझ थी, और वे दोनों बूढ़े थे॥
8 जब वह अपने दलकी पारी पर परमेश्वर के साम्हने याजक का काम करता था।
9 तो याजकों की रीति के अनुसार उसके नाम पर चिट्ठी निकली, कि प्रभु के मन्दिर में जाकर धूप जलाए।
11 कि प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दाहिनी ओर खड़ा हुआ उस को दिखाई दिया।
12 और जकरयाह देखकर घबराया और उस पर बड़ा भय छा गया।
13 परन्तु स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे जकरयाह, भयभीत न हो क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी
इलीशिबा से तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना।
14 और तुझे आनन्द और हर्ष होगा: और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होंगे।
15 क्योंकि वह प्रभु के साम्हने महान होगा; और दाखरस और मदिरा कभी न पिएगा; और अपनी माता के गर्भ
ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा।
19 स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया, कि मैं जिब्राईल हूं, जो परमेश्वर के साम्हने खड़ा रहता हूं; और मैं तुझ से बातें
करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूं।
24 इन दिनों के बाद उस की पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई।
25 कि मनुष्यों में मेरा अपमान दूर करने के लिये प्रभु ने इन दिनों में कृपा दृष्टि करके मेरे लिये ऐसा किया है॥
26 छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा
गया।
27 जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरूष से हुई थी: उस कुंवारी का नाम मरियम था।
28 और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा; आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ
है, प्रभु तेरे साथ है।
31 और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना।
36 और देख, और तेरी कुटुम्बिनी इलीशिबा के भी बुढ़ापे में पुत्र होनेवाला है, यह उसका, जो बांझ कहलाती
थी छठवां महीना है।
37 क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता।

6. भजन संहिता 32: 11

11 हे धर्मियों यहोवा के कारण आनन्दित और मगन हो, और हे सब सीधे मन वालों आनन्द से जयजयकार
करो!

7. आमोस 4: 13

13 देख, पहाड़ों का बनाने वाला और पवन का सिरजने वाला, और मनुष्य को उसके मन का विचार बताने वाला और भोर को अन्धकार करने वाला, और जो पृथ्वी के ऊंचे स्थानों पर चलने वाला है, उसी का नाम सेनाओं का परमेश्वर यहोवा है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. **232: 9-10 (से ;)**

शास्त्र हमें सूचित करता है कि "भगवान से सब कुछ हो सकता है," — आत्मा के लिए सभी अच्छाई संभव है।

2. **260: 13-15 (से ;)**

विज्ञान सभी अच्छे को प्राप्त करने की संभावना को प्रकट करता है, और परमेश्वर को पहले से ही पता लगाने के लिए काम पर नश्वर सेट करता है;

3. **114: 23-29**

क्रिश्चियन साइंस मानसिक के रूप में सभी कारणों और प्रभाव को बताता है, शारीरिक नहीं। यह आत्मा और शरीर से रहस्य का पर्दा उठाता है। यह भगवान के लिए मनुष्य के वैज्ञानिक संबंध को दर्शाता है, जा रहा है की अंतरनिहित अस्पष्टताओं को हटा देता है, और कैद किए गए विचारों को मुक्त करता है। दिव्य विज्ञान में, मनुष्य सहित ब्रह्मांड, आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है।

4. **502: 27-3**

रचनात्मक सिद्धांत - जीवन, सत्य और प्रेम - ईश्वर है। ब्रह्मांड ईश्वर को दर्शाता है। लेकिन एक रचनाकार और एक रचना है। इस रचना में आध्यात्मिक विचारों और उनकी पहचानों का खुलासा होता है, जो अनंत मन में समाहित हैं और हमेशा के लिए परिलक्षित होते हैं।

5. **503: 10-17**

सत्य के ब्रह्मांड में, मामला अज्ञात है। त्रुटि का कोई भी दबाव वहां प्रवेश नहीं करता है। ईश्वरीय विज्ञान, ईश्वर का शब्द, त्रुटि पर अंधेरे के लिए कहता है, "ईश्वर सब में है," और हमेशा मौजूद प्रेम का प्रकाश ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है। इसलिए अनन्त आश्चर्य, - कि अनंत अंतरिक्ष अनगिनत आध्यात्मिक रूपों में उसे दर्शाते हुए, ईश्वर के विचारों से अभिभूत है।

6. **209: 5-8, 10-30**

मन, अपने सभी स्वरूपों पर सर्वोच्च और उन सभी पर शासन करने वाला, विचारों की अपनी प्रणाली, अपने सभी विशाल निर्माण का जीवन और प्रकाश का केंद्रीय सूर्य है; और मनुष्य दिव्य मन के लिए सहायक है। भौतिक और नश्वर शरीर या मन मनुष्य नहीं है।

मन के बिना दुनिया ढह जाएगी, बिना बुद्धि के जो अपनी पकड़ में हवाओं को रखता है। न तो दर्शन और न ही संशयवाद विज्ञान की प्रगति में बाधा डाल सकता है जो मन की सर्वोच्चता को प्रकट करता है।

पृथ्वी की रचना करने वाले यौगिक खनिज या एकत्रित पदार्थ, जो संबंध घटक सामग्री एक दूसरे के साथ रखते हैं, आकाशीय पिंडों की परिमाण, दूरी और क्रांतियाँ, कोई वास्तविक महत्व नहीं हैं, जब हमें याद आता है कि उन सभी को आध्यात्मिक तथ्य को मनुष्य और ब्रह्मांड के अनुवाद द्वारा आत्मा में स्थान देना चाहिए। इसके अनुपात में, मनुष्य और ब्रह्माण्ड सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत पाए जाएंगे।

भौतिक पदार्थों या सांसारिक संरचनाओं, खगोलीय गणनाओं, और सट्टा सिद्धांतों के सभी विरोधाभास, जो कि भौतिक कानून या जीवन और बुद्धि के निवासी की परिकल्पना के आधार पर, अंततः गायब हो जाएंगे, आत्मा के अनंत कलन में निगल जाते हैं।

7. 90: 7-8

पृथ्वी की गति और स्थिति केवल मन से ही बनी रहती है।

8. 102: 9 (वहाँ)-15

लेकिन आत्मा का एक वास्तविक आकर्षण है। ध्रुव को सुई की ओर इशारा करना इस सर्व-शक्तिमान या ईश्वर, दिव्य मन के आकर्षण का प्रतीक है।

क्योंकि परमेश्वर ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है, ग्रहों का उसके निर्माता से अधिक मनुष्य पर कोई अधिकार नहीं है; परन्तु मनुष्य, जो परमेश्वर की सामर्थ को प्रतिबिम्बित करता है, सारी पृथ्वी और उसकी सेना पर प्रभुता करता है।

9. 520: 24 (वां)-3

… पौधा बीज या मिट्टी के कारण नहीं बढ़ता, बल्कि इसलिए बढ़ता है क्योंकि विकास मन का शाश्वत आदेश है। नश्वर विचार जमीन में गिरता है, लेकिन अमर सृजनात्मक विचार ऊपर से आता है, नीचे से नहीं। क्योंकि मन ही सब कुछ बनाता है, अतः निम्न शक्ति द्वारा बनाने के लिए कुछ भी शेष नहीं रहता। आत्मा मन के विज्ञान के माध्यम से कार्य करती है, मनुष्य को कभी भी जमीन जोतने के लिए प्रेरित नहीं करती, बल्कि उसे मिट्टी से श्रेष्ठ बनाती है।इसका ज्ञान मनुष्य को मिट्टी, पृथ्वी और उसके वातावरण से ऊपर उठाकर सचेतन आध्यात्मिक सद्भाव और शाश्वत अस्तित्व की ओर ले जाता है।

10. 13: 20-24

यदि हम एक साकार व्यक्ति के रूप में ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, तो यह हमें उन मानवीय संदेहों और भयों को त्यागने से रोक देगा जो इस तरह के विश्वास में शामिल होते हैं, और इसलिए हम अनंत, निराकार प्रेम द्वारा किए गए चमत्कारों को नहीं समझ सकते हैं, जिसके लिए सभी चीजें संभव हैं।

11. 135: 6-10

यह चमत्कार किसी विकार का परिचय नहीं देता है, लेकिन मौलिक आदेश को प्रकट करता है, भगवान के अपरिवर्तनीय कानून के विज्ञान की स्थापना। आध्यात्मिक विकास अकेले ईश्वरीय शक्ति के व्यायाम के योग्य है।

12. 133: 8-18

मिस्र में, यह मन ही था जिसने इस्राएलियों को विपत्तियों पर विश्वास करने से बचाया था। जंगल में, चट्टान से धाराएँ बहती थीं और मैना आसमान से गिरती थी। इस्राएलियों ने ब्रेज़ेन सर्प को देखा, और सीधे विश्वास किया कि वे वाइपर के जहरीले डंक से ठीक हो गए हैं। राष्ट्रीय समृद्धि में, चमत्कारों ने इब्रियों की सफलताओं में भाग लिया; लेकिन जब वे सच्चे विचार से विदा हुए, तो उनका विध्वंस शुरू हो गया। यहाँ तक कि विदेशी राष्ट्रों के बीच बंदी अवस्था में भी, ईश्वरीय सिद्धांत ने अग्नि भट्ठी में और राजाओं के महलों में परमेश्वर के लोगों के लिए चमत्कार किए।

13. 293: 13-31

भौतिक तथाकथित गैसें और ताकतें दिव्य मन की आध्यात्मिक ताकतों की नकल हैं, जिसकी ताकत सत्य है, जिसका आकर्षण प्रेम है, जिसका जुड़ाव और एकता जीवन है, जो होने के शाश्वत तथ्यों को बनाए रखता है। बिजली भौतिकता की वह तेज़ अतिरिक्त चीज़ है जो आध्यात्मिकता या सत्य के असली सार की नकल करती है, — बड़ा अंतर यह है कि बिजली बुद्धिमान नहीं है, जबकि आध्यात्मिक सत्य मन है।

इंसानी मन का कोई बेकार गुस्सा नहीं है — जो भूकंप, हवा, लहर, बिजली, आग, जानवरों जैसी क्रूरता में ज़ाहिर होता है — और यह तथाकथित मन खुद ही खत्म हो जाता है। बुराई के रूप, जो ईश्वरीय न्याय की नकल करते हैं, उन्हें धर्मग्रंथों में "भगवान का गुस्सा" कहा गया है। असल में, वे गलती या पदार्थ की खुद ही बर्बादी दिखाते हैं और पदार्थ के विपरीत, आत्मा की ताकत और स्थायित्व की ओर इशारा करते हैं। क्रिश्चियन साइंस सत्य और उसकी सर्वोच्चता, सार्वभौमिक सामंजस्य, ईश्वर की संपूर्णता, अच्छाई और बुराई की शून्यता को सामने लाता है।

14. 68: 4-6, 27-30

कभी-कभी हम सीखेंगे कि आत्मा, महान वास्तुकार, ने विज्ञान में पुरुषों और महिलाओं को कैसे बनाया है।

क्रिस्चियन साइंस अभियोग प्रस्तुत करता है, अभिवृद्धि नहीं; यह अणु से मन तक कोई भौतिक विकास नहीं दर्शाता है, लेकिन मनुष्य और ब्रह्मांड के लिए दिव्य मन का एक संस्कार है।

15. 521: 5-6, 12 (वां)-17

जो कुछ भी बना है वह परमेश्वर का कार्य है, और सब कुछ अच्छा है।

मनुष्य की समरसता और अमरता बरकरार है। हमें इस विपरीत धारणा से दूर देखना चाहिए कि मनुष्य भौतिक रूप से बनाया गया है, और हमारी निगाहें सृष्टि के आध्यात्मिक रिकॉर्ड की ओर मोड़ें, जिसे समझ और दिल पर "हीरे की नोक से" और एक स्वर्गदूत की कलम पर उकेरा जाना चाहिए।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6